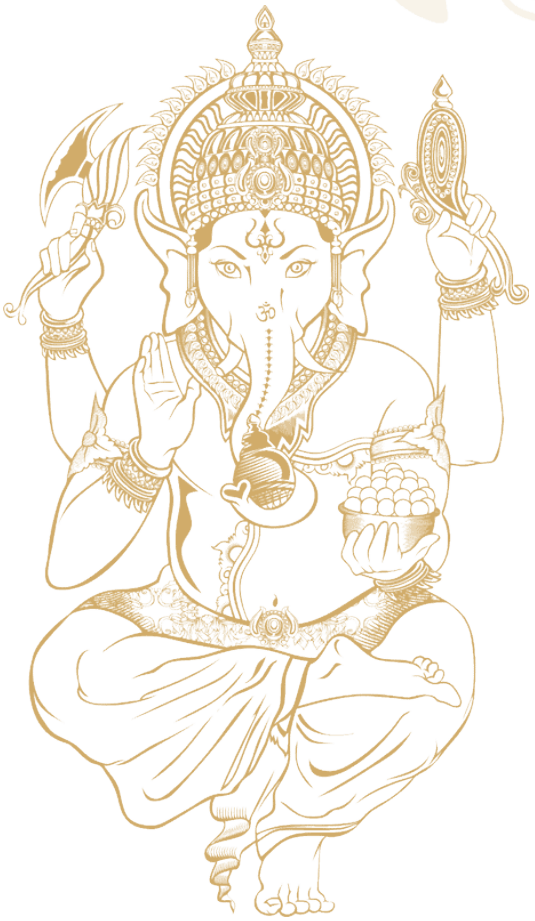

S

J

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121094602

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
19-20/02/1998	जन्म तिथि	31/05/2002
गुरु-शुक्रवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 02:35:00	जन्म समय	09:45:00 घंटे
घटी 48:34:18	जन्म समय(घटी)	10:39:12 घटी
India	देश	India
Firozpur	स्थान	Moga
30:55:00 उत्तर	अक्षांश	30:49:00 उत्तर
74:38:00 पूर्व	रेखांश	75:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:31:28	स्थानिक संस्कार	-00:29:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:09:16	सूर्योदय	05:27:13
18:22:35	सूर्यास्त	19:26:35
23:49:47	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:09

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 9वर्ष 8मा 13दि		23:11:52	वृश्चि	लग्न	कर्क	12:46:15	चन्द्र 7वर्ष 1मा 9दि	
केतु		07:11:09	कुंभ	सूर्य	वृष	15:39:57	राहु	
03/11/2024		09:51:25	वृश्चि	चंद्र	मक	13:51:10	10/07/2016	
04/11/2031		26:12:03	कुंभ	मंगल	मिथु	07:53:02	10/07/2034	
केतु	01/04/2025	05:10:09	कुंभ	बुध व	वृष	09:49:34	राहु	23/03/2019
शुक्र	01/06/2026	09:51:42	कुंभ	गुरु	मिथु	22:31:23	गुरु	15/08/2021
सूर्य	07/10/2026	28:12:10	धनु	शुक्र	मिथु	18:47:27	शनि	21/06/2024
चन्द्र	08/05/2027	23:18:24	मीन	शनि	वृष	23:21:47	बुध	09/01/2027
मंगल	04/10/2027	16:45:38	सिंह व	राहु	वृष	23:58:50	केतु	27/01/2028
राहु	22/10/2028	16:45:38	कुंभ व	केतु	वृश्चि	23:58:50	शुक्र	27/01/2031
गुरु	28/09/2029	16:08:32	मक	हर्ष	कुंभ	04:56:46	सूर्य	22/12/2031
शनि	07/11/2030	06:57:18	मक	नेप व	मक	17:00:43	चन्द्र	22/06/2033
बुध	04/11/2031	14:07:30	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	22:34:41	मंगल	10/07/2034

लग्न-चलित

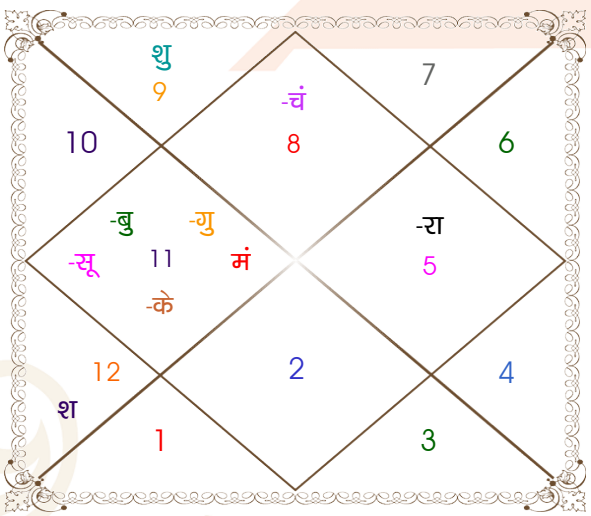

लग्न-चलित

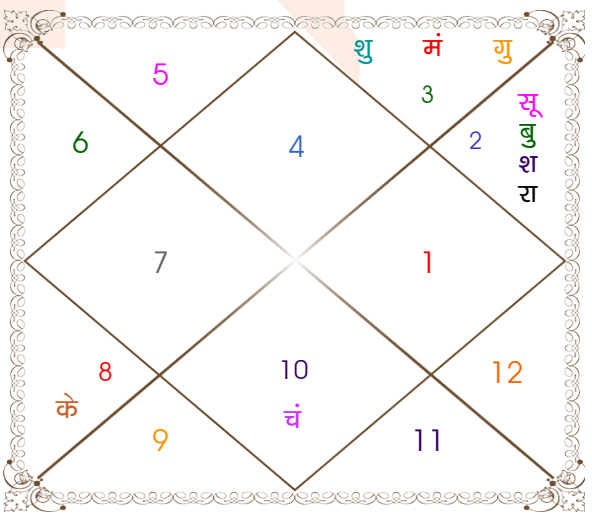

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

S का वर्ग सर्प हS तथा J का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार S और J का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

S मंगलीक हS क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु S कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

J मंगलीक हS क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल J कि कुण्डली में द्वादश भाव में मिथुन राशि में स्थित हS अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।

न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु J कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु J कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित हS अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

S तथा J में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।